© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 08 | October - December 2017

महाकवि कालिदास की कृतियों में प्रकृति प्रेम

दीपक
शोधार्थी, गुरू जम्भेश्वर धार्मिक अध्ययन संस्थान,
गुरू जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
हिसार।

कविता रानी
सहायक प्राध्यापिका (संस्कृत),
राजकीय कन्या महाविद्यालय,
हिसार।

ISSN : 2348-5612 © URR
9 770234 856124

सृष्टि के आदि से अद्य पर्यन्त प्रकृति मानव की सहचरी रही है। मानव भी अपनी सहचरी के संरक्षण हेतु प्रयासरत रहा है। प्रकृति के क्रीडाङ्गण में मनुष्य का सर्वतोमुखी विकास निर्भर है। यही कारण है कि मानव ने अपनी कृतियों में भी प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की है। 'पर्यावरण' शब्द की व्युत्पत्ति परि उपसर्ग पूर्वक आवरण शब्द के योग से हुई है जिसका अर्थ है– चारों ओर से घिरा हुआ।

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य में सर्वश्रेष्ठ कवि हैं जोकि कवि कुलगुरू के रूप में भी विख्यात है। महाकवि कालिदास महान चिंतक, कवि, दार्शनिक तथा दूर–दृष्टा होने के साथ–साथ प्रकृति प्रेमी भी थे। हम कालिदास की कृतियों में मनुष्य का प्रकृति के साथ अनेक प्रकार से संबंध देख सकते हैं।

अभिज्ञानशाकुन्तलम्– अपने सुप्रसिद्ध नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कवि ने वनस्पतियों से प्राप्त वस्तुओं से वन कन्याओं के शृंगार का वर्णन किया है जो शिरीष के फूलों को अपने कानों पर कुण्डल रूप में धारण करती है। जैसे–

क्षणचुम्बितानि भ्रमरैः पश्य सुकुमारकेसरशिखानि।
अवतंसयन्ति सदयं शिरीषकुसुमानि प्रमदाः।।[1]

उस समय शकुन्तला का प्रकृति प्रेम और भी अधिक आभासित होता है जब वह पति गृह को जा रही है, तब कालिदास ने स्वयं महर्षि कण्व से कहलवाया है कि हे वृक्षों! जो शकुन्तला तुम्हें सींचे बिना पानी नहीं पीती थी, शृंगारप्रिय होते हुए भी स्नेह के कारण तुम्हारे फूल व पत्तों को नहीं तोड़ती थी और प्रथम पुष्प दर्शन होने पर जो उत्सव मनाती थी, वह आज पति गृह को जा रही है अतः सभी वृक्ष उसे अनुमति प्रदान करें। यथा–

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या,
नादते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः,
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।।[2]

इससे मनोहारी प्रकृति के प्रति प्रेम भला कहाँ अन्यत्र प्राप्य है जैसा कि 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में दृष्टिगोचर हुआ है। प्रकृति के प्रति महाकवि कालिदास जैसी सूक्ष्म कल्पना अन्यत्र दुर्लभ है। शकुन्तला के शृंगार हेतु प्रकृति का भी अपने उपासक के प्रति कहीं न कहीं प्रेमभाव के साथ कृत्यज्ञता का भाव लक्षित होता है। कालिदास के प्रकृति प्रेमी होने का अन्यतम सुंदर उदाहरण नहीं हो सकता। जैसे–

क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरूणामाङ्गल्यमाविष्कृतं,
निष्ठयूतश्चरणोपभोगसुलभो लाक्षारसः केनचिद्।
अन्येभ्यो वनदेवताकरतलैरापर्वभागोत्थितैः।
दत्तान्याभरणानि तत्किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्द्वभिः।[3]

महाकवि कालिदास ने अपने काव्यों में नायिका की उपमा में प्रकृति से उपमानों का चयन किया है। कवि शकुन्तला को न भोगी हुई कन्या, न सूंघा हुआ फूल, खरोंच रहित पल्लव, तराशा हुआ रत्न, नूतन रस, नवीन मधु, समस्त पुण्यों का फल आदि विशेषणों से अलंकृत कर शकुन्तला को भी प्रकृतिमय बना दिया है।

प्रकृति के साथ तुलना करने में कालिदास एक अद्वितीय कवि है। यथा–

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररूहै,
रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम्।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं,
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।।[4]

रघुवंशम्– आज पर्यावरण के घटकों में वायु, जल, भूमि, मृदा, अन्तरिक्ष आदि सभी में प्रदूषण की समस्या है। जो मानव के लिए अति घातक सिद्ध हो रही है। प्राकृतिक वातावरण का सबसे महत्वपूर्ण तत्व जलवायु है। अच्छी जलवायु का मनुष्य के जीवन में बड़ा योगदान है। महाकाव्य ''रघुवंशम्'' में अनुकूल पवन की गति को मन की इच्छाएं पूरी करने वाली बतलाई गई है –

पवनस्यानुकूलत्वात्प्रार्थना सिद्धिशंसिनः।[5]

इसी संबंध में कवि ने सुगंधित पवन की तुलना सुगंधित मानव श्वास से की है। अर्थात् हमारा श्वास हमारे आस–पास की वायु पर निर्भर करता है। यदि वायु शुद्ध एवं सुगंधित है तो हमारी श्वास भी शुद्ध एवं सुगंधित ही होगी। यथा–

सरसीष्वरविन्दानां वीचिविक्षोभशीतलम्।
आमोदमुपजिघ्रन्तौ स्वनिःश्वासानुकारिणम्।।[6]

अपनी रचनाओं में महाकवि कालिदास ने प्राकृतिक पर्यावरण के साथ–साथ खनिजों के महत्त्व की भी प्रशंसा की है। वर्तमान समय में ये खनिज पदार्थ ही किसी भी देश की शक्ति को गौरवान्वित करते हैं। अपने महाकाव्य 'रघुवंशम्' में सोना, चांदी, हीरा, तांबा, मोती आदि खनिजों का वर्णन किया है। यथा–

तं सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतवः।
हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धि श्यामिकापि वा।[7]

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 08 | October - December 2017

काव्य को उद्धरणो से कसौटी पर परखकर कवि कुलगुरु अपनी कृतियों में प्रकृति के वास्तविक अद्वितीय रुप को चित्रित करने में सफल हुए है। इसी प्रकार मोती की प्रशंसा में भी कवि ने बड़े सुंदर ढंग से अपनी लेखनी का प्रयोग किया है। यथा–

ताम्रपर्णी समेतस्य मुक्तासारं महोदधेः।
ते निपत्य ददुस्तस्मै यशः स्वमिव संचितम्।।[8]

ऋतुसंहार – 'ऋतुसंहार' में वर्णित ऋतु वर्णन परवर्ती संस्कृत साहित्य हेतु आदर्शस्वरूप है। महाकवि कालिदास ने विभिन्न ऋतुओं को अनेक विरूदों से विभूषित किया है। वे शरद् ऋतु को 'आपक्वशलिरूचिरा तनुगात्रयष्टिः' और नववधू से उपमित करके काव्यमंच पर लाए है। यथा–

काशांशुका विकचपद्ममनोज्ञवक्त्रा सोन्मादहंसरवनूपुरनादरम्या।
आपक्वशालिरूचिरा तनुगात्रयष्टिः प्राप्ता शरन्नवधूरिव रूपरम्या।।[9]

'ऋतुसंहार' में ऋतुओं के क्रमिक विकास का सचित्र वर्णन प्राप्त होता है। ऋतुसंहार में ग्रीष्म ऋतु को प्रथम एवं वसन्त ऋतु को अंतिम ऋतु के रूप में स्थापित करके अपने सूक्ष्म दृष्टिकोण का परिचय दिया है। ऋतुओं के बदलते वातावरण से मानव के मन–मस्तिष्क, भाव–विचार, वेशभूषा तथा अन्य क्रिया कलापों में निरंतर परिवर्तन होता है। अतः इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि पर्यावरण मानव के क्रिया–कलापों को नियंत्रित करता है। अपनी महामेधा से एक ही प्रभात काल के दो पक्षों का वर्णन किया है। यदि प्रभात काल कमल का विकासक है तो कुमुद पुष्पों का संकोचक/प्रातः काल का स्पर्श पाकर यदि सूर्य उदित होता है तो चन्द्रमा अस्तमित।

मेघदूतम्– महाकवि कालिदास प्राकृतिक सौंदर्य एवं चिंतन के सर्वोत्कृष्ट कवि होने के साथ–साथ प्राकृतिक वस्तुओं की तुलना करने में अद्वितीय हैं। गीतिकाव्य ''मेघूदतम्'' में बादल को धूम, ज्योति, जल और हवा के समुदाय से उत्पन्न बताया है जो वैज्ञानिक कसौटी पर भी सिद्ध हो चुका है। यथा–

धूम ज्योतिः सलिलमरूतां सन्निपातः क्व मेघः।
सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।।[10]

कालिदास ने पर्यावरणीय सौन्दर्य का यथासमय वर्णन किया है। नदियां, पहाड़, पेड, पौधे, सूर्य, चन्द्रमा, तारे आदि का सर्वोत्तम ढंग से वर्णन किया है। थोडे जल वाली नदी को वेणी के समान तथा गिरते हुए सूखे पत्तों से पीत वर्ण वाले विरूदों से विभूषित किया है। यथा–

वेणीभूतप्रतनुसलिलाऽसावतीतस्य सिन्धुः
पाण्डुच्छाया तटरूहरूभ्रंशिभिर्जीर्णपर्णैः।।[11]

प्रकृति का कमनीय सौंदर्य उनकी दृष्टि में उद्भाषित हुआ था। इसका प्रमाण उनकी कृतियों में सर्वत्र सुप्राप्य जाता है। यक्षिणी की सुंदरता के विषय में कवि विभिन्न प्राकृतिक उपमानों का प्रयोग करता है जो पाठक के हृदय को आह्लादित कर देते हैं। भारतवर्ष के मानचित्र में जिन–जिन स्थानों का नामनिर्देश आज भी देखा जाता है, वे सब 'मेघूदतम्' काव्य रूपी मानचित्र में तत्काल दर्शनीय थे। कहीं मयूर कण्ठ उन्नत करता हुआ दिखाई पड़ता है, तो कहीं पर नंदी के विमल सलिल में उद्वर्तन करती हुई शफरी दृष्टिगोचर होती है।

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 08 | October - December 2017

कुमारसंभव : महाकवि कालिदास ने मानव तथा दूसरे जीवों के परस्पर संबंध को अपनी लेखनी से स्पष्ट किया है। पशु–पक्षियों तथा अन्य जीवों के परस्पर आचरण को आधुनिक मानव के लिए आदर्श घोषित किया है। महाकाव्य कुमारसंभव में एक उदाहरण के माध्यम से पार्वती और हिरणों के प्रेम को दर्शाया है और पार्वती उनकी आंखों पर अपनी आंखें रखकर उनकी छोटाई–मोटाई नाप लेती थी। यथा–

अरण्यबीजं जलिदानलालितास्तथा च तस्यां हरिणाविशश्वसुः।
यथा तदीयैर्नयनैः कुतूहलात्पुरः सखीनाममिमीतलोचने।।[12]

इसी प्रकार 'रघुवंशम्' में भी सीता परित्याग के समय उनका जोर–जोर से करुण क्रन्दन सुनकर मोरों का न नाचना, वृक्षों द्वारा पुष्प रूपी आँसुओं को गिराना और हिरणों ने भी हरी घास को न खाना। इस प्रकार सीता जी के दुख से दुखी होकर समूचा वन रोने लगा। जैसे–

नृत्यं मयूराः कुसुमानि वृक्षा दर्भानुपात्तन्विजहुर्हरिण्यः
तस्याः प्रपन्ने समुदुःखभावमत्यन्तमासीद्रुदितं वनेऽपि।।

निष्कर्ष–

औद्योगिक युग में महाकवि कालिदास को पर्यावरण संरक्षक कहने में किसी प्रकार की अतिशयोक्ति नहीं होगी। अपने पर्यावरण संबंधी अनुभव को जनसामान्य तक पहुंचाना किसी साधारण प्रतिभा का कार्य नहीं हो सकता। यह दैवी प्रतिभा, असाधारण मेधा तथा व्यापक संवेदना का परिणाम है। कालिदास ने मानव एवं प्रकृति के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं खींची है। उन्होंने मानव एवं प्रकृति दोनों के बीच मंजुल संपर्क एवं एकरसता स्थापित करते हुए यह सिद्ध कर दिया है कि प्रकृति का इतना मनोहर चित्रण कोई प्रकृति एवं पर्यावरण प्रेमी ही कर सकता है। इसका स्वतः प्रमाण महाकवि कालिदास ने अपनी कृतियों में बहुतायत में दिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् एवं संस्कृत साहित्य इतिहास (लक्ष्मी पब्लिशिंग हाउस) 1/4, पृ संख्या 26
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम – कालिदास 4/9
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास 4/5
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास 2/10
5. रघुवंशम् – कालिदास 1/42
6. रघुवंशम् – कालिदास 1/43
7. रघुवंशम् – कालिदास 1/10
8. रघुवंशम् – कालिदास 4/50
9. संस्कृत साहित्यातिहास– डा0 ओमप्रकाश सारस्वत, प्रकाशक भारतीय संस्कृत भवन पृ0 सं0 26
10. मेघदूतम् – पूर्वमेघ 5, पृ0 सं0 13
11. मेघदूतम् – कालिदास, पूर्वमेघ 29, पृ0 सं0 65